दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/18(JS)–HL-**HL1**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1 | 19|06|2019

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) 'कन्नौजी' बोली का परिचय

कन्नौजी बोली 'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा वर्ग की बोली है जिसका क्षेत्र कन्नौज के आसपास का माना जाता है।

अपनी प्रवृत्ति में कन्नौजी ब्रजभाषा व खड़ी बोली के लक्षणों को समाहित किये हुए है जिससे खड़ी बोली से इसे विभेदित कर पाना अत्यन्त कठिन कार्य है परन्तु कुछ विद्वानों ने इसे भिन्न बोली की संज्ञा दी है।

ध्वनिगत विशेषताएँ

1) 'ण' के स्थान पर कई जगह न का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

2) 3 महाप्राण ~~शब्दों~~ ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण
मुझको – मुजको

3) 'ऐ' तथा 'औ' का शुद्ध उच्चारण

4) कई जगह महाप्राणीकरण व द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति भी दर्शित होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणगत विशेषताएँ

1. संज्ञा का एक ही रूप
2. वचन तथा लिंगानुसार विशेषणों में परिवर्तन
3. परसर्गों का पूर्ण विकास इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रारंभिक खड़ी बोली और खुसरो की कविता

अमीर खुसरो का समय 13वीं -14वीं शताब्दी का माना जाता है। वे एक संगीतज्ञ, होने के साथ-साथ एक उच्च कवि व भाषाविद् भी थे इसी संदर्भ में प्रारंभिक खड़ी बोली उनके काव्य में प्रयुक्त हुई है।

खुसरो ने अपनी कविता में खड़ी बोली का प्रयोग मुख्यतः पहेलियों, मुकरियों एवं सूफी काव्य में किया है।

उदाहरणतया- "एक थाल मोती से भरा, सबके ऊपर औंधा धरा
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे"

उपरोक्त उदाहरण में खड़ी बोली अपने विशुद्धतम शाब्दिक व व्याकरणिक स्वरूप में उपस्थित हुई है।

इसी प्रकार मुकरियों व दो सुखनों में ब्रज भाषा मिश्रित खड़ी बोली का स्वरूप देखने को मिलता है

· "पान सड़ा क्यों
घोड़ा अड़ा क्यों"

या "मोरा मोसे सिंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे उदाहरण इस दृष्टि से द्रष्टव्य हैं
कुल मिलाकर खुसरो ~~समय~~ खड़ी बोली के विकास से पूर्व ही ऐसी परिष्कृत खड़ी बोली का प्रयोग कर रहे थे जिससे आचार्य शुक्ल विस्मित होकर पूछने लगते हैं:-

" क्या इस समय तक भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी, जितनी खुसरो की पहेलियों व मुकरियों में मिलती है ? "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भोजपुरी बोली मागधी अपभ्रंश से व्युत्पन्न बिहारी हिन्दी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक प्रचलित बोली है। जिसका प्रयोग चंपारन, राँची, गया के साथ-साथ पूर्वी उत्तरप्रदेश के कुछ हिस्सों जैसे बनारस, बलिया, गोरखपुर इत्यादि में होता है। साथ ही विदेशों में (फिजी, मॉरिशस, त्रिनिडाड टोबैगो) भी भोजपुरी समाज की उपस्थिति के कारण इसका प्रयोग प्रचलित है।

ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

1. 'ड़' के स्थान पर 'र' का प्रयोग
   लड़का → लरका
2. 'औ' तथा 'ऐ' का संध्यक्षरों के रूप में प्रयोग
   यथा औरत → अउरत
3. 'ण' के उच्चारण की अनुपस्थिति
4. श के स्थान पर 'ह' का प्रयोग
   निश्चय → निहचय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

व्याकरण संबंधी विशेषताएँ

1. संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं।
2. कारकीय ~~परसर्ग~~ परसर्गों का लगभग पूर्ण विकास हो चुका है।
3. सर्वनामों में तोहरी, ओकरा, हमरा इत्यादि का प्रचलन
4. क्रिया रूपों में वर्तमान काल के लिए 'त' रूप, भूतकाल के लिए 'ल' रूप तथा भविष्यकाल के लिए 'ब' रूप का प्रयोग
5. एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए 'लोग' जैसे प्रयोग क्योंकि 'हम' आदि का प्रयोग सम्मान की दृष्टि से होता है।

हम → हम लोग इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) हिंदी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भाषा के क्षेत्र से अभिप्राय उस क्षेत्र से है जहाँ हिन्दी बोली जाती है या फिर समझी जाती है। पठन - पाठन के रूप में हिन्दी का प्रयोग करने वाले क्षेत्रों को भी हम इसमें शामिल कर सकते हैं।

इस दृष्टि से प्रथम वर्ग उन राज्यों का है जहाँ हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। ऐसे राज्य कुल संख्या में 10 हैं
मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखण्ड छत्तीसगढ़ तथा दिल्ली

दूसरा वर्ग उन आर्यभाषा क्षेत्रों का है जहाँ हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है यथा महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब इत्यादि इन क्षेत्रों में हिन्दी भाषा समझी तथा पढ़ी जाती है।

तृतीय वर्ग उन क्षेत्रों का है जहाँ हिन्दी का प्रयोग मुख्यतः संपर्क भाषा के रूप में होता है ऐसे राज्यों में दक्षिण के राज्य प्रमुख हैं यथा - कर्नाटक, आँध्रप्रदेश, केरल। आंध्रप्रदेश के हैदराबाद क्षेत्र में हिन्दी का एक रूप 'दक्खिनी'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी विशेष प्रचलित है।

विदेशों में भी फिजी, मॉरिशस, टोबैगो इत्यादि देश जहाँ भारतीय समाज बहुलता में उपस्थित है हिन्दी भाषा क्षेत्र में आ जाते हैं।

पुनः विश्व के लगभग 121 देशों में विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा के पठन-पाठन का कार्य चल रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप

सिद्ध साहित्य वाममार्गी बौद्धवाद से संबंधी पूर्वी मध्यप्रदेश में पोषित सिद्ध संप्रदाय द्वारा अपनी मान्यताओं के प्रचार हेतु लिखित साहित्य को कहते हैं।

सिद्धों का समय 9वीं से 11वीं शताब्दी का माना जाता है और इनकी रचनाएँ मुख्यतः 'अर्धमागधी अपभ्रंश' में रचित हैं। परन्तु संस्कृत से हिन्दी तक की यात्रा में अपभ्रंश एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है जिस कारण खड़ी बोली के आरंभिक संकेत सिद्ध साहित्य में देखने को मिल जाते हैं।

<u>यथा</u>

~~अवतार~~ 'पंडिअ सअल सत्त बक्खाणअ.
देहहिं बुद्ध बसंत ण जाणअ"

या

"घर ही बइसी <u>दीवा</u> जालै, कोणहिं बइसी घंय झालै"

उपरोक्त उदाहरणों में 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग तथा दीवा, बइसी इत्यादि शब्दों में आकारान्तता तथा ईकारान्तता की प्रवृत्ति खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

एहसास कराती है

पुन: सिद्ध साहित्य भक्तिकाल के संत साहित्य हेतु भी प्रेरणास्रोत माना जाता है जो कि खड़ी बोली के विकास में उच्चतम स्थान रखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

ब्रजभाषा मध्यकाल की काव्यभाषाओं में सर्वोत्कृष्ट रूप में उभरी तथा एकमात्र काव्य-भाषा के रूप में स्थापित होकर अखिल-भारतीय हो उठी।

मध्यकाल के दो प्रमुख काव्यांदोलनों 'भक्ति काल' व 'रीतिकाल' में ब्रजभाषा में जो रचनाएँ हुईं वे श्रृंगारिकता, कलात्मकता प्रवाह तथा गति से परिपूर्ण हैं। इसके प्रमुख कारण निम्नांकित हैं।

1. भौगोलिक कारण : ब्रजभाषा का उत्पत्ति क्षेत्र ब्रज (आगरा, मथुरा) को माना जाता है जो यमुना किनारे होने के कारण कभी आर्थिक वंचन से प्रभावित नहीं रहा। आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण यहाँ की प्रवृत्ति जीवन के आनन्द की ओर तत्पर हुई और कलात्मकता का प्रणयन हुआ पुनः यह क्षेत्र 'कृष्ण' के मिथक से जुड़ा होने के कारण भी कलात्मकता से सहज जुड़ जाता है क्योंकि कृष्ण का जीवन ही 'जीवन जीने की कला' है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(2) राजनीतिक कारण : स्थिर केन्द्रीय शासन व्यवस्था के कारण रीतिकालीन दरबारों में 'कला' तथा 'आनन्द' की खोज की जाने लगी। 'बिहारी' का काव्य हो या फिर 'केशव' का, राजनीतिक प्रश्रय कलात्मकता का प्रमुख कारण था।

(3) सूर के हाथों में पड़कर ही ब्रज भाषा का काव्यात्मक विकास हुआ परन्तु सूर के अंधत्व के कारण अपने पदों का विषयगत विस्तार करने में अक्षम रहे जिसके कारण कविता में आलंकारिता, वात्सल्य व अन्य भावगत वैविध्य प्रमुख हो गया।

(4) ब्रज-भाषा 'प' वर्ग प्रधान बोली है म, प जैसी ध्वनियाँ कोमलता की अभिव्यक्ति के लिए सहज मानी जाती हैं।

(5) ब्रज-भाषा अपने आंतरिक रूप में प्रवाह को धारण करती है जिस कारण यह मुक्तकों के लिए विशेषीकृत हो गई। मुक्तक काव्यरूप में कलात्मकता की अभिव्यक्ति की संभावना ज्यादा होती है क्योंकि यहाँ 'विभाव योजना' हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्थान नहीं होता तथा 'अनुभाव योजना' का वैविध्य इसे कलात्मक बना देता है।

उपरोक्त कारणों से मध्यकाल में ब्रजभाषा श्रृंगारिकता व कलात्मकता की प्रमुख भाषा बनी जिसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

" कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है नैनन ही सौं बात"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली है जिसका प्रयुक्त क्षेत्र मुख्यतः मेरठ, दिल्ली के आसपास का है।

ध्वनिगत विशेषताएँ

(1) ७ अपनी प्रकृति में यह 'आकारान्त' बोली है।

(42) 'न' के स्थान 'ण' का प्रयोग देखने को मिलता है। सयाना → सयाणा

(43) 'ऐ' तथा 'औ' का प्रयोग 'ए' तथा 'ओ' के रूप में होता है।

(4) अन्यप्राणीकरण की प्रवृत्ति दर्शित होती है।
यथा मुझको → मुज्झको

(5) आदि अक्षर के लोप की प्रवृत्ति
यथा इकट्ठा → कट्ठा

(6) द्वितीकरण की प्रवृत्ति
बापू → बाप्पू

व्याकरणगत विशेषताएँ

(1) खड़ी बोली में कर्म, कर्ता कारक के लिए भी 'ने' परसर्ग के प्रयोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का प्रचलन है जिससे कर्ता और कर्म में संशय की संभावना उत्पन्न हो जाती है।

2. क्रिया के रूपों में वर्तमान काल हेतु 'त' रूप, भूतकाल हेतु 'था' रूप तथा भविष्य काल हेतु 'ग' रूप प्रचलित हैं।

3. विशेषण, लिंग वचनानुसार विकारी प्रवृत्ति के हैं। यथा - काला घोरा, काली घोरी

4. वचन के दो ही प्रकार - एकवचन तथा बहुवचन मिलते हैं। कई जगह ~~एकवचन~~ बहुवचन शब्दों का प्रयोग भी एकवचन की तरह होता है।

5. नपुंसक लिंग पूर्णतः अनुपस्थित है।

6. सर्वनामों ~~के~~ इस प्रकार हैं।

प्रथम पुरुष : ~~हूँ~~ मैं, मेरा, वो, उसका
द्वितीय पुरुष : तूँ, तेरा, तुमको, तैने
अन्य पुरुष : उसका, उनका, वे, वै

खड़ी बोली की भाषिक विशेषताएँ ही परिमार्जित होकर आधुनिक हिन्दी में पर्यवसित हुई हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करते हुए अपभ्रंश के प्रमुख भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं का ई. 500 से ई. 1100 तक के प्रचलित रूप को कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट भाषा।

अपभ्रंश के अध्ययन हेतु मुख्यतः दो तरह के स्रोत माने गये हैं। साहित्यिक स्रोत तथा शिलालेख।

साहित्यिक स्रोतों में जैन काव्य, सिद्ध साहित्य आदि प्रमुख हैं यथा स्वयंभू का रिट्ठनेमि चरिउ, हेमचन्द्र का अपभ्रंश व्याकरण - सिद्ध-हेम शब्दानुशासन, सिद्धों में सरहपा आदि के दोहे एवं चर्यापद इत्यादि।

10 वीं से 14 वीं शताब्दी के शिलालेखों यथा [illegible] आदि में भी अपभ्रंश के अंश दिखते हैं।

अपभ्रंश के भेदों पर भाषाविदों तथा आलोचकों में विवाद की स्थिति है। एक तरफ जहाँ मार्कण्डेय तथा नेमिसाधु जैसे विद्वान तीन भेद बताते हुए पूर्वी, पश्चिमी तथा व्राचड़ अपभ्रंश में भाषा का विभाजन करते हैं तो वहीं सुनीति कुमार चटर्जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे आधुनिक भाषावैज्ञानिक अपभ्रंश को भाषा की बजाय एक भाषिक स्थिति मानते हुए प्रत्येक प्राकृत के बाद एक अपभ्रंश की व्यवस्था की परियोजना करते हैं। इस प्रकार अपभ्रंश के कुल रूप निकलकर सामने आते हैं

शौरसेनी प्राकृत → शौरसेनी अपभ्रंश
खस प्राकृत → खस अपभ्रंश
अर्धमागधी प्राकृत → अर्धमागधी अपभ्रंश
मागधी प्राकृत → मागधी अपभ्रंश
राजस्थानी प्राकृत → राजस्थानी अपभ्रंश

इन्हीं भाषिक स्थितियों से वर्तमान हिन्दी की उपभाषाओं का विकास माना गया है।

हालांकि अब यह आम सहमति का विषय है कि पहले अपभ्रंश एक भाषा रही होगी जो राजनीतिक कारणों से विस्तारित होकर विभिन्न भाषाओं के साथ अंतर्क्रिया करके भाषिक विकास की स्थिति बन गई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' के व्याकरणिक भिन्नता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पूर्वी हि-दी' तथा 'पश्चिमी हि-दी' अर्धमागधी तथा शौरसेनी अपभ्रंश से उपन्न हि-दी की दो प्रमुख उपभाषाएं है। पूर्वी हि-दी के प्रतिनिधि के रूप में हम 'खड़ी बोली' को 'अवधी' को तथा पश्चिमी हि-दी की प्रवृत्तियों के लिए 'खड़ी बोली' को ध्यान में रखते हैं क्योंकि ब्रजभाषा व अवधी से अत्यधिक समानता रखती है जिसके कारण वैज्ञानिक अध्ययन क्लिष्ट हो जाता है।

व्याकरणिक भिन्नताएँ निम्नांकित है।

(1) परसर्गों का प्रयोग → पूर्वी हि-दी में जहाँ भूतकालीन सकर्मक क्रिया में कर्म के साथ 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है वहीं पश्चिमी हि-दी में किसी परसर्ग के प्रयोग का प्रचलन नहीं है।

(2) लिंग व्यवस्था :- पूर्वी हि-दी में नपुंसक लिंग पूर्णतः अनुपस्थित है जबकि पश्चिमी हि-दी में नपुंसक लिंग के कुछ प्रयोग दिख जाते हैं यथा सोनो इत्यादि पुनः पूर्वी हि-दी में 'इया' परसर्ग स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्रयुक्त होता है जैसे कि बहनिया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~3. वचन व्यवस्था : पूर्वी हिन्दी~~
जबकि पश्चिमी हिन्दी में 'ई' तथा इयाँ परसर्ग का प्रयोग यथा बेटा → बेटी

3. वचन व्यवस्था : पूर्वी हिन्दी में 'आन' प्रत्यय का प्रयोग बहुवचन बनाने के लिए होता है यथा लरिका → लरिकन इत्यादि जबकि पश्चिमी हिन्दी में 'ए' प्रत्यय यथा बेटा → बेटे तथा इयाँ बिटिया → बिटियाँ। पूर्वी में 'न्ह' के प्रयोग की भी परंपरा है। सखी → सखिन्ह

4. संज्ञा : पूर्वी हिन्दी में संज्ञा के तीन रूप देखने को मिलते हैं जैसे कि लरका, लरिकवा, लरिकउना जबकि पश्चिमी हिन्दी में एक रूप 'लड़का'

5. विशेषण : पश्चिमी हिन्दी में विशेषण लिंग वचनानुसार विकारी हैं यथा काले लड़के, काली लड़की इत्यादि जबकि पूर्वी हिन्दी में अविकारी यथा छोट लरिका, छोट बिटिया इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. सर्वनामों में रूप समानता देखने को मिलती पर कुछ प्रयोग भिन्न हैं.

पूर्वी हिन्दी : मैं, हौं, मेरा
तू, तुहि, तेरा
ते, वे

पश्चिमी हिन्दी : मैं, म्हारा
तूं, तेरो
तिनतें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के विकास में भाषिक धरातल पर अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा ~~पाली~~ संस्कृत से होकर पालि, प्राकृत से गुजरते हुए आधुनिक रूप में अपभ्रंश के माध्यम से पहुँची है।

भाषा के विकास में अपभ्रंश का योगदान निम्नांकित है :

(1) प्रवृत्ति : वियोगात्मक प्रवृत्ति (परसर्गों पर आधारित) का विकास अपभ्रंश काल से ही ~~से~~ मुख्यत: देखने को मिलता है जो हिन्दी तक आते-आते परिपक्व हो गया है और संस्कृत की संयोगात्मक प्रवृत्ति से पूर्णत: मुक्त हो गया है।

(2) ~~पर~~ परसर्गों का विकास : कुछ प्रमुख परसर्ग यथा सम्बन्ध कारक के लिए 'को' तथा अधिकरण के लिए 'पर' अपभ्रंश से ही विकसित हुए हैं।

(3) विशेषण : संख्यावाचक विशेषण मुख्यत: सात, ग्यारह आदि

(4) ध्वनियों में ड़, ढ़ की ध्वनियाँ, ह्रस्व तथा दीर्घ ह तथा दीर्घ ड़ह का लोप

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा ह्रस्व ह्रह का ऍ, इ, अ, उ, ऍ में प्रयोग अपभ्रंश काल से ही शुरू हो गया था जो आज तक प्रचलित है

(5) अन्त्य व्यंजनों का अस्वीकार. यथा
जगत् → जग
महान् → महा

(6) अतिपूरक दीर्घीकरण की प्रवृत्ति
कर्म → कम्म → काम

(7) महाप्राण व्यंजनों के स्थान पर 'ह' का प्रयोग
दधि → दही

(8) शब्दशास्त्र के स्तर पर तद्भव शब्दों का विकास अपभ्रंश काल से ही शुरू हुआ जो कि विकसित होकर आधुनिक रूप तक पहुँचा यथा
ध्वन्यात्मक शब्द - खिल- खिल
घर-गृहस्थी → रस्सी घूंघट इत्यादि

तथा अरबी, फारसी भाषा के शब्दों का हिन्दी में समावेश भी इसी काल की देन है। यथा - चाबुक, खुदा इत्यादि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार अपभ्रंश ने हिन्दी के भाषिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'छत्तीसगढ़ी' बोली का परिचय दीजिये।

छत्तीसगढ़ी पुर्वी हिन्दी उपभाषा वर्ग की छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रयुक्त (रायपुर, बिलासपुर इत्यादि) बोली है जिसकी प्रमुख भाषिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(1) 'र' के स्थान पर 'र' तथा 'स' के स्थान पर 'ह' का प्रयोग
जैसे कि सीता → हीता
लड़का → लरका

(2) ण के प्रयोग की अनुपस्थिति तथा 'व' का 'ब' के रूप में प्रयोग

(3) दो शब्दों को मिश्रित कर महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है
जैसे कि करते हैं → करथन

(4) व्यंजनों के द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति भी कहीं-कहीं परिलक्षित होती है।

(5) महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति सामान्य रूप से दिखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(i) छत्तीसगढ़ी में देशज शब्दों के प्रयोग की प्रचुरता देखने को मिलती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में उस मोड़ पर आते हैं जब आचार्य शुक्ल व आचार्य द्विवेदी ~~साहि~~ साहित्येतिहास को अपनी 'विधेयवादी' व 'परंपरावादी' इतिहास दृष्टि से परिपक्व कर चुके थे। प्रामाणिक तथ्यों की उपलब्धि की समस्या लगभग खत्म हो चुकी थी तथा काल-विभाजन भी वैज्ञानिक हो गया था।

ऐसे में 'हिन्दी साहित्य : संवेदना और विकास' नामक पुस्तक में उन्होंने स्पष्ट किया कि परंपरा और वैज्ञानिकता (चित्तवृत्तियों का दर्पण) अलग-अलग सिद्धान्त नहीं बल्कि एक ही है; परंपरा के विकास से ही जनता की चित्तवृत्तियाँ निर्मित होती हैं। ~~और~~ इस प्रकार इन्होंने आचार्य शुक्ल और आचार्य द्विवेदी की इतिहास-दृष्टि को एकीकृत करने का प्रयास किया।

~~कई~~ कई जगह उन्होंने आचार्य शुक्ल के सिद्धांतों यथा भक्ति आंदोलन में इस्लाम के प्रभाव (म्लेच्छवाहिनी के आक्रमण) का समर्थन किया तो कई जगह उसमें संशोधन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी किया यथा कबीर की भाषा के संबंध में आचार्य शमशेर रूप चतुर्वेदी अपने लेखन में समकालीन कवियों लेखकों को भी पर्याप्त स्थान देते हैं तथा उनके महत्व को प्रतिपादित करते हैं।

काल विभाजन के विषय में उनका मत ~~मम~~ अगले स्तर पर जाकर भक्ति काल, आदिकाल के सिद्ध साहित्य आदि का ~~पम~~ पुनर्जागरण तथा अन्य को रीतिगत प्रवृत्तियों में विभाजित करता है।

कुल मिलाकर उनके यहाँ विभिन्न दृष्टियाँ साथ मिलाकर चलने लगती हैं तथा एक संश्लिष्ट इतिहास उपस्थित होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) मनोवैज्ञानिक कहानी का परिचय

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मनोविज्ञान का प्रयोग यूँ तो हिन्दी कहानी में शुरुआत से ही अभिन्न अंग रहा है तथा प्रेमचन्द एवं प्रसाद जैसे कथाकारों ने आमजन के मनोविज्ञान का सहज प्रयोग अपनी कहानियों में किया है।

परन्तु एक धारा के रूप में मनोवैज्ञानिक कहानी का प्रणयन जैनेन्द्र द्वारा किया गया जो बाद में इलाचन्द जोशी और अज्ञेय के लेखन में परिपक्व होकर उभरा।

मनोवैज्ञानिक कहानी फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करती है। फ्रॉयड का मानना है कि व्यक्ति की काम-चेतना (लिबिडो) उसके व्यक्तित्व का एक प्रमुख अंग है। व्यक्ति का अध्ययन 'चेतन मन' के स्तर पर करना अत्यन्त भ्रामक हो सकता है अतः व्यक्तित्व की सही परख व व्यक्ति के निर्णयों में मुख्य भूमिका अचेतन तथा अवचेतन मन की है। फ्रॉयड इन्हें 'इड', 'इगो' तथा सुपरइगो के माध्यम से व्याख्यायित करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अज्ञेय की कहानी 'पठार का धीरज', 'मरुस्थल' आदि मनोवैज्ञानिक कहानियों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा की भिन्नताएँ

संतकाव्यधारा व सूफी काव्यधारा ~~कई~~ यूँ तो कई स्तरों पर समान हैं परन्तु उनकी कुछ भिन्नताएँ दृष्टव्य हैं जो इस प्रकार हैं।

1. संतकाव्यधारा का दार्शनिक आधार अनिश्चित है। ये कवि ~~के~~ वैष्णववाद, सूफीवाद, अद्वैतवाद आदि दर्शनों से एकसाथ प्रभावित दिखते हैं। जबकि सूफी काव्यधारा 'सूफी दर्शन' को अपना आधार मानती है।

2. रहस्यवाद : संत कवियों के यहाँ साधनात्मक ~~रहस्य~~ रहस्यवाद मुख्यतः जबकि भावनात्मक रहस्यवाद गौण रूप में मिलता है जबकि सूफी काव्यधारा मुख्यतः भावनात्मक रहस्यवाद पर आधारित है।

3. भाषा : संतकाव्यधारा विभिन्न भाषाओं के मिश्रण से बनी 'पंचमेली खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी भाषा' का प्रयोग करती है जबकि सूफी काव्यधारा मुख्यतः ठेठ अवधी का।

4. सूफी काव्यधारा में फारसी प्रभाव संतकाव्यधारा से अधिक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

5. छंद के स्तर पर सूफी काव्यधारा मुख्यत: दोहा, चौपाई
~~कु~~ जबकि संत काव्यधारा साखी, सबद आदि छंदों का प्रयोग करती है।
हालांकि कबीर जैसे कवियों ने ~~क~~ कई जगह
सूफी काव्यधारा से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण
की है।

समग्रत: दोनों धाराओं का योगदान हिन्दी कविता
के विकास में अप्रतिम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आंचलिक कहानी

आँचलिक कहानी से तात्पर्य ऐसी कहानियों से है जो किसी अंचल-विशेष की परिस्थितियों पर आधारित हों तथा उस अंचल को समग्रता में धारण करती हों।

ऐसी कहानियों की प्रमुख विशेषता उनमें प्रयुक्त अंचल विशेष की भाषा से संबंधित देशज शब्दों की प्रचुरता है।

देशज शब्दों की प्रचुरता एक तरफ जहाँ अंचल विशेष के व्यक्तियों के लिए उस कहानी को सुग्राह्य बना देती है वहीं दूसरे लोगों के लिए दुरूह।

परन्तु इसमें उठाई गई समस्याएँ कहीं न कहीं समसामयिक समस्याओं से जुड़ जाती हैं और देश-काल का अतिक्रमण करती हैं।

रांगेय राघव ~~[illegible]~~ की कुछ कहानियों को इस वर्ग में शामिल किया जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) इप्टा

इप्टा का पूरा नाम इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोशियेशन है जो कि फ्रांस के पीपुल्स थियेटर एसोशिएशन से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करता है।

इप्टा का मुख्य योगदान राष्ट्रीय आंदोलन तथा समाजवादी आंदोलन के प्रसार में हैं तथा इसने इन विचारधाराओं से संबंधित नाटकों का प्रणयन व मंचन कर रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इप्टा से संबंधित प्रमुख हस्तियों में उस दौर के समस्त वामपंथी विचारधारा के लेखक- नाटककार मुख्य रूप से नामित किये जाते हैं यथा रामविलास शर्मा, रांगेय राघव, कैफी आजमी इत्यादि।

बलराज साहनी इप्टा से संबंधित प्रमुख अभिनेता थे तथा नाटकों के मंचन में प्रमुख योगदान देते थे। 'पृथ्वी थियेटर' से संबंध बनने के बाद 'पृथ्वी थियेटर' के कलाकार भी इप्टा में अपनी प्रस्तुतियां देने लगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इप्टा आज भी सामाजिक व राष्ट्रीय महत्व के नाटकों के मंचन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन-परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान अप्रतिम है लेकिन उसकी कई सीमाएँ भी हैं। विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में आचार्य शुक्ल शीर्षपुरुष माने जाते हैं। आचार्य शुक्ल ने पहली बार साहित्येतिहास लेखन को परिपक्व इतिहास-दृष्टि, प्रामाणिक तथ्यों तथा वैज्ञानिक काल विभाजन से समृद्ध किया तथा एक प्रौढ़ परम्परा की स्थापना की। उनके योगदान के कारण ही आज भी साहित्येतिहास लेखन उन्हीं के विचारों के इर्द-गिर्द घूमता है। या तो उनके विरोध में या सहमति में। तब भी उनके लेखन में कुछ सीमाएं दृष्टव्य हैं।

1. क्षण, जाति और वातावरण पर आधारित वैज्ञानिक दृष्टि ने तत्कालीन परिस्थितियों को तो स्थान दिया परन्तु परंपरा व ~~व्यक्तित्व~~ को साहित्यकार का व्यक्तित्व उनके यहाँ नकार दिये गये जिस कारण वे भक्ति आंदोलन को सिर्फ इस्लामी आक्रमणों का प्रभाव मान बैठे। ~~[illegible]~~

2. ~~[illegible]~~ प्रबंध काव्यधारा और सगुण काव्य के प्रति उनके आग्रह के कारण मुक्तक तथा निर्गुण काव्यधारा को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनके लेखन में पर्याप्त सम्मान व स्थान नहीं मिला। इसका प्रमुख कारण उनकी मर्यादावादी, अभिजात्यवादी दृष्टि मानी जा सकती है।

3. = कबीर की संवेदना को उन्होंने सराहा पर अभिजात्यवादी दृष्टि के कारण कबीर की भाषा उन्हें 'खिचड़ी' ही लगी।

4. = सूफी काव्यधारा को वे फारसी प्रभाव से सम्मत बताते हैं ~~जबकि~~ तथा मुख्यतः मुसलमान धर्म से जोड़ते हैं जबकि सच में गणपति चन्द्र गुप्त ने सिद्ध किया सूफी परंपरा का बहुतांश भारतीय ही है।

5. = आदिकाल का नामकरण उन्होंने बहुख्यात प्रवृत्ति के आधार पर 'वीरगाथाकाल' कर दिया जबकि 'वीर-गाथा काव्य' बहुख्याति के बावजूद संपूर्ण को छोटा हिस्सा ही था जिसके कारण उन्हें समस्त धर्म साहित्य (सिद्ध - नाथ) आदि को साहित्य से अलग करना पड़ा।

6. = अपने समकालीन रचनाकारों यथा प्रेमचन्द तथा प्रतीकवादी आंदोलनों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे छायावाद को वे यथोचित महत्व नहीं दे सके तथा प्रतीकवाद को तिरस्कृत करते रहे जिसके कारण समस्त छायावादी कवियों को आलोचना के क्षेत्र में उतरना पड़ा।

उनकी इन सीमाओं का बाद में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी व गणपति चन्द्र गुप्त जैसे विद्वानों ने समग्रता से मूल्यांकन कर अपेक्षित सुधार किये तथा साहित्येतिहास को व्यवस्थित किया।

तब भी कहना न होगा कि 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका में लिखा गया 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' आज भी साहित्येतिहास की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है एवं साहित्येतिहास में आचार्य शुक्ल का नाम सदैव सम्मान से लिया जायेगा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दलित-जीवन की अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी कहानी पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी कहानी अपनी शुरूआत से ही समाज के प्रत्येक वर्ग को साहित्य-लेखन में स्थान दिलाने के लिए संघर्षरत रही है।

कहानी के शुरूआती दौर में हालांकि दलित रचनाकार अपनी 'स्वयंवेदना' लेकर उपस्थित नहीं हो पाए पर प्रेमचन्द की कहानियों में दलित शोषण एवं दलित जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है वह अपने आप में उत्कृष्ट है चाहे वह सद्गति का 'दुखी' हो या फिर कफन ~~के~~ का 'माधव' या फिर अन्य पात्र। उन्होंने दलित जीवन के प्रत्येक पक्ष को उघाड़कर रख दिया है।

प्रेमचन्द के बाद कुछ समाजवादी कहानीकारों जैसे कि रांगेय राघव, यशपाल आदि ने भी दलित-जीवन को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया। यथा मुद्राराक्षस की 'टेपवू'

दलित जीवनाभिव्यक्ति में बड़ी छलांग तब लगी जब दलित साहित्यकारों ने घोषित कर दिया कि संवेदना चाहे जितनी गहरी हो वह 'स्वयंवेदना' की बराबरी नहीं कर सकती। ऐसे साहित्यकार अपने अनुभव लेकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लेखन के अंत में आये तथा दलित दृष्टि से साहित्य लेखन किया।

डा. धर्मवीर, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिषराय आदि साहित्यकारों की 'सलाम' लाठी' जैसी कहानियाँ विशिष्ट स्थान की पात्र है।

दलित महिला लेखकों ने अपने साहित्य में दोहरे शोषण की अभिव्यक्ति की। एक तो सवर्णों के खिलाफ, दूसरा दलित समाज के ही पुरुषों के खिलाफ। 'सुशीला टाकभौरे' जैसी लेखिकाएँ इस दृष्टि से 'सिलिया' जैसी कहानियाँ लेकर आई।

आज भी नयी पीढ़ी के दलित- लेखक आधुनिक समाज में व्याप्त शोषण तंत्र को उजागर करने में लगे हैं तथा दलित -लेखन को एक नई दिशा तथा दशा प्रदान कर रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच हिन्दी का प्रथम व्यावसायिक रंगमंच माना जाता है जिसने नाटक को जनता से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

1. भड़कीली मंचसज्जा तथा सज्जित पर्दों का अत्यधिक प्रयोग।

2. नृत्य तथा गीतों की अधिकता

3. भावातिरेकपूर्ण सम्वाद योजना तथा ~~अर~~ अत्यंतांगिक अभिनय शैली

4. आसान, आमजन को समझ में आने वाली भाषा शैली। उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

5. ये रंगमंच तकनीक के अधिक प्रयोग पर आधारित थे तथा वर्जित दृश्यों का मंचन भी सहजता से कर लेते थे यथा स्नान, मृत्यु, वर्षा इत्यादि

6. कथानक मुख्यतः पारंपरिक कथाओं जैसे कि रामायण, महाभारत आदि से लिया जाता था या फिर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रचलित प्रेमकथाओं जैसे कि लैला-मजनू इत्यादि से

7. = नाटक के बीच-बीच में प्रहसनों का भी मंचन किया जाता था ताकि मनोरंजन को अधिकतम किया जा सके

8. = ये रंगमंच एक टोली के रूप में यात्रा करते थे तथा विभिन्न स्थानों पर नाटकों का प्रदर्शन करते थे।

पारसी रंगमंच से संबंधित प्रमुख नाटककारों में आगा हश्र, तुलसीदास शैदा आदि शामिल हैं तथा प्रवण-कुमार, सीता-हरण जैसे नाटकों का मंचन प्रमुखता से किया जाता था।

मर्यादावादी तथा अभिजात्यवादी नाटककार यथा 'जयशंकर प्रसाद' इत्यादि हालांकि पारसी थियेटर को हेय दृष्टि से देखते हैं परन्तु 'लक्ष्मीनारायण लाल' सम आलोचक पारसी थियेटर को रंगमंच के विकास का एक प्रमुख पड़ाव मानते हैं तथा अफसोस जताते हैं कि इसे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्य में उचित स्थान नहीं मिला जिससे नाटक व जनता, साहित्य व धन आदि का संबंध हट गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation